रक्षाबन्धन का पर्व पवित्रता की यादगार

रक्षाबन्धन का पर्व भारत के मुख्य त्योहारों में से एक है यह सदा किसी धार्मिक अथवा पवित्र व्यक्ति द्वारा कराई जाती है और सूत्र बँधवाने वाला व्यक्ति संकल्प करने वाले को दक्षिणा भी देता है। इसी का रूपान्तर रक्षाबन्धन है। इतिहास में किसी समय कन्यायें, बहनें धार्मिक दृष्टिकोण से महान अथवा उच्च बनी होंगी और उन्होंने 'ब्राह्मण' पद अथवा ब्राह्मी स्थिति प्राप्त की होगी, तब उन्होंने नर नारियों को जो कि आत्मिक रूप से भाई-भाई है, कुछ नियमों अथवा ब्रतों की प्रतिज्ञा या संकल्प लेने के लिए सूत्र बाँधा होगा और तिलक दिया होगा और भाईयों ने उन्हें इस शुभ कार्य के लिए उपहार दिया होगा, तभी तो आज ब्रह्मण भी यजमानों को राखी बॉधते हैं और बहनें भी सूत्र बाँधती हैं। एक ही त्योहार पर दोनों द्वारा एक ही रस्म का अदा किया जाना उपरोक्त रहस्य ही का सूचक है। उसी समय की जब पुनरावृत्ति हो रही है।

रक्षा बन्धन का वास्तविक रहस्य

वास्तव में रक्षाबन्धन की शुभ रस्म शुरू तो किसी अन्य अभिप्राय से हुई थी परन्तु समयान्तर में रक्षा और बन्धन शब्द का गलत अर्थ ले लेने के कारण इसका स्वरूप बदल गया। सबसे पहली भूल तो यह हुई कि रक्षा शब्द का अर्थ शारीरिक रक्षा मान लिया गया। यद्यपि रक्षा का एक अर्थ शारीरिक रक्षा भी है परन्तु रक्षा शब्द के और भी अर्थ है और जिस शब्द के अनेक अर्थ हों उसका जो अर्थ प्रसंग के अनुसार ठीक बैठता हो, वही लेना बुद्धिमता है। अब जानने के योग्य एक बात यह है कि रक्षा शब्द का एक प्रयोग तो गम्भीरता पूर्ण किसी रहस्य की रक्षा के लिए भी होता है। अपने मन में किसी बात को सम्भाल कर रखना, उसे अन्य लोगों को न बताना यह रहस्य रक्षा है। संस्कृत भाषा में रहस्यम् रक्षति अर्थात रहस्य की रक्षा करता है उसका प्रयोग हुआ है। वहाँ पर रक्षा का अर्थ 'शारीरिक रक्षा' लेना भूल होगा। इसी प्रकार आपदा के समय के लिए कुछ धन बचाकर अथवा सम्भालकर रखना यह 'धन रक्षा' है। 'अप्रदार्थे धनं रक्षते' ऐसा संस्कृत में कहा जाता है। पहले, जब लोग भूत-प्रेत में विश्वास रखते थे, वे रात्रि को एक दीपक जलाकर रखते थे जिसे वे 'रक्षा प्रदीप' कहते थे। उनका विचार था कि अन्धेरे में अशुद्ध आत्मायें किसी कमरे में घुस आती हैं और उत्पात मचाती हैं, जहाँ प्रकाश होता है वहाँ नहीं आती हैं। तो वह रक्षा-प्रदीप कोई शारीरिक रक्षा के लिए नहीं था परन्तु कमरें में पड़ी वस्तुओं को भी भूत-प्रेतों की तोड़-फोड़ से बचाने के लिए तथा मानसिक भय से भी त्राण पाने के लिए था। रक्षा-प्रदीप में 'रक्षा' शब्द अपना एक विशेष अर्थ लिए हुए रहता था। पुराने जमाने में लोग एक प्रकार की तावीज पहनते थे। जिसको वे 'रक्षा भूषण' अथवा 'रक्षामणि' भी कहते थे। इसी तरह अपने धर्म में स्थित रहना, धर्म से न गिरना-यह धर्म की रक्षा है। तो जबकि 'रक्षा' शब्द कई प्रकार से प्रयुक्त होता है, तो हमें जानना होगा कि 'रक्षा' शब्द का अर्थ क्या है।

जैसे 'रक्षा' शब्द कई अर्थों में प्रयोग होता है , वैसे ही बन्धन में अथवा 'बन्ध' शब्द के भी अनेक अर्थ है। उदहरण के तौर पर जब हम कहते हैं, कि हमारी 'आशा बन्ध गई' तो उस वाक्य में 'बन्ध' शब्द का अर्थ किसी रस्सी या जंजीर से किसी को बाँधना नहीं होता। किसी समझौते या प्रतिज्ञा में किसी को शामिल करना यह भी एक बन्धन कहलाता है। अत: देखना होगा कि 'रक्षा बन्धन' में 'बन्धन' शब्द किस अर्थ में प्रयोग हुआ है।

वास्तविक रहस्य एवं उससे प्राप्ति

इस त्योहार के पीछे रहस्य तो यह है कि सृष्टि की आदि (अर्थात स्थापना काल) में परमपिता परमात्मा शिव और प्रजापिता ब्रह्मा के निर्देश से सच्चे ब्राह्मणों ने तथा शिव-शक्ति रूपा बहनों ने मुनष्यों को यह बन्धन बाँधा था कि वे पवित्र बनें अर्थात काम, क्रोधादि पर विजय प्राप्त करें। अत: यदि उस वास्तविक रहस्य को जानकर इस पर्व को मनाया जाए तो इस पर्व से बहुत भारी प्राप्ति हो सकती है। किंवदन्ति है कि रक्षाबन्धन पर्व मनाने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है। इसके बारे में एक जगह यह भी वर्णन आता है कि जब असुरों से हार कर इन्द्र ने अपना राज्य भाग्य गँवा दिया था तो उसने भी इन्द्राणी से यह रक्षा बन्धन बँधवाया था और इसके फलस्वरूप अपना खोया हुआ स्वराज्य पुन: प्राप्त कर लिया था। इसी प्रकार एक दूसरे आख्यान में यह वर्णन मिलता है कि यम ने भी अपनी बहन यमुना से रक्षा-बन्धन बँधवाया था और उसने कहा था कि इस बन्धन को बाँधने वाले मनुष्य यमदूतों से छूट जाएगा। प्रश्न यह उठता है कि इस त्योहार से इतनी बड़ी प्राप्ति कैसे हो सकती है।

पवित्रता एवं संकल्प की सच्ची राखी

यह त्योहार एक धार्मिक त्योहार है और यह इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने के संकल्प का सूचक हैं अर्थात भाई और बहन के नाते में जो मन, वचन और कर्म की पवित्रता समाई हुई है, उसका बोधक है। पुनश्च यह ऐसे समय की याद दिलाता है जब परमपिता परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा कन्याओं माताओं को ब्राह्मण पद पर आसीन किया, उन्हें ज्ञान का कलश दिया और उन द्वारा भाई-बहन के सम्बन्ध की पवित्रता की स्थापना का कार्य किया, जिसके फलस्वरूप सतयुगी पवित्र सृष्टि की स्थापना हुई। उसी पुनीत कार्य की आज पुनरावृत्ति हो रही है। ब्रह्माकुमारी बहनें ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग द्वारा ब्राह्मण पद पर आसीन होकर बहन-भाई के शुद्ध स्नेह और पवित्रता के शुद्ध संकल्प का रक्षाबन्धन बांधती हैं।